हिंदुत्व

ज्योतिर्मय शर्मा

Hindutva

by Jyotirmaya Sharma

प्रकाशकः पेंगुइन बुक्स, यात्रा बुक्स के सहयोग से
प्रकाशितः दिसंबर 2006
भाषाः हिंदी
मुद्रणः पेंगुइन
मूल्यः रु 150.00
आई एस बी एनः 0143099949
ऐडिशनः पेपर बैक
फ़ॉरमेटः बी
पृष्ठः 220pp
वर्गीकरणः कथेतर
क्षेत्र अधिकारः विश्व

- **Published by** Penguin Books India in association with Yatra Books
- **Published:** December 2006
- **Language:** Hindi
- **Imprint:** Penguin
- **Special Price:** Rs. 150.00
- **Cover Price:** Rs. 150.00
- **ISBN:** 0143 099949
- **Edition:** Paperback
- **Format:** B
- **Extent:** 220pp
- **Classification:** Non Fiction
- **Rights:** World

पिछले दशक में हिंदू राष्ट्रवाद के उग्र स्वरूप के तेज़ी से सामने आने ने कुछ सवाल खड़े कर दिए हैं: हिंदू कौन है? हिंदूवाद क्या है? और हिंदुओं के लिए हिंदुत्व और हिंदूवाद के क्या मायने हैं? इन प्रश्नों के जवाब खोजते हुए इस पुस्तक में यह बात सामने लाने का प्रयास किया गया है कि राजनीतिक हिंदूवाद उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में हिंदुत्व की पुनर्स्थापना में रत कतिपय दार्शनिकों व चिंताओं के प्रयासों का प्रतिफल है। साथ ही इसमें राष्ट्रवाद, पहचान और संस्कृति के मुद्दों को भी उठाया गया है। स्वामी दयानं श्री अरबिंदों, स्वामी विवेकानंद तथा वी.डी.सावरकर की रचनाओं के हवाले से लेखक ने प्रमाणित किया है कि हिंदुत्व के वर्तमान रूप को गढ़ने में इन चारों व्यक्तियों की क्या भूमिका रही है।

विद्वतापूर्ण, तीक्ष्ण एवं बेबाक शैली में लिखी गई 'हिंदुत्व' राजनीतिक हिंदुत्व को पोषण देने वाली बौद्धिक परंपराओं के प्रति एक नया नज़रिया प्रदान करती है। यह इस आवश्यकता को भी रेखांकित करती है कि हिंदू धर्म को संपूर्ण एवं अनेक रूपी बताने वाली परंपराओं का भी विश्लेषण किया जाए।

लेखक परिचय

ज्योतिर्मय शर्मा ने हल, ऑक्सफ़ोर्ड और दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया है। वेसेंटर फ़ॉर द स्टडी ऑफ़ डेवलपिंग सोसाइटी, दिल्ली और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ एडवांस्ड स्टडी, शिमला में फ़ैलो भी रह चुके हैं। सन् 1998 में उन्होंने 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया' के संपादकीय पृष्ठ के लिए काम किया और कुछ समय पहले तक इसके हैदराबाद संस्करण के रेज़िडेंट एडिटर थे।

अनुवादक परिचय

जितेंद्र कुमार पेशे से पत्रकार हैं और दिल्ली में रहते हैं। फ़िलहाल हिंदी पत्रकारिता में सांप्रदायिकता और जातिवाद पर शोध कर रहे हैं।